

Inhalt

| | | |
|---------|---|-----|
| I. | Forschungsstand und Ziel der Arbeit..... | 11 |
| II. | Die Überlieferung | 17 |
| II.1. | Die Handschriften..... | 17 |
| II.1.1. | KARLSRUHE, Badische Landesbibliothek, Cod. DON 144 (olim Donaueschingen, Fürstl. Fürstenberg. Hofbibl., Cod. 144 (L192)) = Do1..... | 17 |
| II.1.2. | STRASBURG, Bibliothèque Municipale, Cod. allem. 287 (olim M 810 N.75) = Str9..... | 28 |
| II.1.3. | HAMBURG, SUB, cod. theol. 1060 b (verschollen)..... | 30 |
| II.2. | Das Verhältnis der Handschriften..... | 33 |
| III. | Die Sprache der Leithandschrift Do1..... | 44 |
| IV. | Die Quellen der Kompilation..... | 50 |
| IV.1. | <i>PHILOSAPHUS</i> (5–26) | 62 |
| IV.2. | <i>Vita anime, Facies anime, Cognicio angelii, Questio vtrum angelus flet</i> (27–51) | 63 |
| IV.3. | <i>Homo perfectus debet habere, Contemplacio, Speculacio, Jubilacio</i> (52–91)..... | 65 |
| IV.4. | <i>Anima, Diligere</i> (92–115)..... | 68 |
| IV.5. | <i>Angelus animam clarificat</i> (116–124)..... | 70 |
| IV.6. | <i>Oracio, Spiritus, Lux anime</i> (125–144) | 71 |
| IV.7. | <i>Deus tempus est bis Anime egressio</i> (145–205)..... | 73 |
| IV.8. | <i>Anima creata, Ymago dei, Anime nobilitas, Anime vie</i> (206–254)..... | 76 |
| IV.9. | <i>Sequitur questio. Pvritas hominis</i> (287–326)..... | 78 |
| IV.10. | <i>Deus et creatura bis Pauper spiritus</i> (327–409)..... | 83 |
| IV.11. | <i>Anime congregacio</i> (410–420)..... | 91 |
| IV.12. | <i>Raptus pauli, Intelligere dei et anime</i> (421–429) | 91 |
| IV.13. | <i>Natura, deus uel spiritus bis Quid est caritas</i> (430–446) | 92 |
| IV.14. | <i>Oracio uel desiderium spirituale</i> (447–465)..... | 116 |
| IV.15. | <i>Cafus hominis bis Differencia inter culpam, defectum et remedium</i> (466–517)..... | 117 |
| IV.16. | <i>Cecitas lensus</i> (518–540) | 118 |
| IV.17. | <i>Vniri deo</i> (541–557)..... | 119 |
| IV.18. | <i>Spiritus procedens et anima bis Potencia anime</i> (558–610)..... | 119 |

| | | |
|--------|---|-----|
| IV.19. | <i>Loqui deo</i> (611–618)..... | 120 |
| IV.20. | <i>Virtus et operacio. Differencia bis Locus creature</i> (619–652) | 121 |
| IV.21. | <i>Liber est causa bis Anime intelleccio</i> (771–803)..... | 123 |
| IV.22. | <i>Verbum nature deus</i> (804–820) | 125 |
| IV.23. | <i>Anima quomodo vna primo generat aliam</i> (821–829) | 127 |
| IV.24. | <i>Cognicio anime, Angelus</i> (830–842)..... | 128 |
| IV.25. | <i>Opera in peccato mortali facta. Questio</i> (868–888)..... | 129 |
| IV.26. | <i>Quomodo dus formauit nos</i> (894–905) | 130 |
| IV.27. | <i>Verbum dei, Amare deum et proximum</i> (906–924)..... | 131 |
| IV.28. | <i>Mortificare vel occidere bis Redire ad deum</i> (925–957) | 132 |
| IV.29. | <i>Orare, Intellectus, Absolutum</i> (958–981)..... | 137 |
| IV.30. | <i>Medium anime</i> (982–985)..... | 137 |
| IV.31. | <i>Minimum, maximum, Sequere deum, Seque deum</i> (986–1009) | 138 |
| IV.32. | <i>Verbum dei</i> (1010–1019) | 140 |
| IV.33. | <i>Species sensibilis dei bis Pater generat</i> (1020–1065) | 142 |
| IV.34. | <i>Paffio christi</i> (1080–1121)..... | 147 |
| IV.35. | <i>Jhesus deus</i> (1310–1314)..... | 149 |
| IV.36. | <i>Caritas comparatur, Caritas operans</i> (1327–1338) | 149 |
| IV.37. | <i>Consciencia, Operacio anime et virtutum</i> (1339–1353)..... | 151 |
| IV.38. | <i>Anime operacio, Nascitur deus in anima, Anime felicitas Questio</i> (1354–1372)..... | 159 |
| IV.39. | <i>Anima</i> (1373–1381) | 161 |
| IV.40. | <i>Libertas</i> (1382–1386) | 162 |
| IV.41. | <i>Contricio</i> (1387–1390) | 162 |
| IV.42. | <i>Questio, Questio, Ydee</i> (1391–1418) | 163 |
| IV.43. | <i>Potencie anime generantur</i> (1419–1427) | 164 |
| IV.44. | <i>Verbum dei</i> (1428–1436) | 165 |
| IV.45. | <i>Loqui de deo</i> (1437–1445)..... | 167 |
| IV.46. | <i>Exercicium hominis intrinsicum</i> (1446–1450)..... | 168 |
| IV.47. | <i>Spiritu solicitatis quero</i> (1451–1463) | 169 |
| IV.48. | <i>Lux diuine effencie, Nobilis spiritus, trinitas, Natura dei</i> (1464–1484)..... | 171 |
| IV.49. | <i>Deus quid est</i> (1485–1489)..... | 172 |
| IV.50. | <i>Angelus</i> (1490–1494)..... | 174 |
| IV.51. | <i>Anima vnde venit, Anima vbi plus sit</i> (1495–1502)..... | 175 |
| IV.52. | <i>Vides videre</i> (1503–1507)..... | 175 |
| IV.53. | <i>Caritas, amor, Effencia dei</i> (1508–1516) | 176 |
| IV.54. | <i>Deus in trinitate</i> (1517–1520)..... | 176 |
| IV.55. | <i>Anima contemplare</i> (1521–1525) | 177 |
| IV.56. | <i>Lux divina, Amor nomine dei</i> (1526–1546) | 177 |
| IV.57. | <i>Gignere in anima, operare, Querere deum</i> (1547–1562) | 178 |
| IV.58. | Exzerpte aus dem „Compendium theologicae veritatis“ des Hugo Ripelin von Straßburg (1568–2310)..... | 179 |

| | |
|--|-----|
| Inhalt | 9 |
| IV.59. Der abschließende „Glossar“–Teil | 217 |
| IV.60. Zusammenfassung | 233 |
| IV.61. Übersicht zu den Abschnitten des SpdS und deren Quellen | 240 |
| V. Formen der Kompilation..... | 266 |
| VI. Die Kompilation als Spiegel..... | 289 |
| VII. Zusammenfassung | 295 |
| VIII. Edition und Quellenapparat | 299 |
| IX. Wortverzeichnis..... | 638 |
| X. Lateinischer Wortschatz | 721 |
| XI. Verzeichnis der Eigennamen | 732 |
| XII. Verzeichnis der Handschriften und Drucke | 733 |
| XIII. Abkürzungen und abgekürzt zitierte Literatur | 738 |
| XIV. Literaturverzeichnis | 740 |
| XIV.1. Textausgaben | 740 |
| XIV.2. Grammatiken, Nachschlagewerke | 741 |
| XIV.3. Handschriftenkataloge | 742 |
| XIV.4. Darstellungen | 743 |
| XV. Register | 747 |
| XV.1. Namen und Texte | 747 |
| XV.2. Autoren (Forschung) | 753 |